पाठ–3

देव (रीतिकालीन)

(हँसी की चोट, सपना, दरबार)

कवि परिचय– रीतिकालीन रीतिबद्ध कवि देव का पूरा नाम देवदत्त द्विवेदी था। इनका जन्म सन् 1673 ई. में उत्तर प्रदेश के इटावा में हुआ। ये एक दरबारी कवि थे। इन्होंने अनेक आश्रयदाता बदलें। इनके प्रमुख आश्रयदाता भोगीलाल थे। कवि देव सन् 1767 ई. तक जीवित रहे।

प्रमुख रचनाएँ– 'भाव विलास, 'भवानी विलास', 'कुशल विलास', 'रस विलास', 'काव्य रसायन', 'प्रेम तरंग', 'प्रेम चन्द्रिका' आदि।

काव्यगत विशेषताएँ– कवि देव प्रेम और सौंदर्य के कवि थे। इनके काव्य में शृंगार के उदात्त रूप का चित्रण है। अनुप्रास, और यमक इनके पसंदीदा अलंकार है।

कवि देव के काव्य की भाषा कोमलकान्त पदावली युक्त ब्रज भाषा है। भाषा में प्रवाह और लालित्य है। प्रचलित मुहावरों का भी खूब प्रयोग किया है।

हँसी की चोट

साँसनि ही सौं.....हरि जू हरि।।

प्रसंग–कवि : देव कविताः हँसी की चोट

प्रस्तुत सवैये में प्रिय (श्रीकृष्ण) की हँसी से घायल गोपी के विरह का वर्णन है। उसी विरह के कारण पंच भौतिक। तत्वों (वायु, जल, अग्नि, भूमि एवं आकाश) से बने शरीर से एक–एक तत्व निकलता जा रहा है।

व्याख्या–कवि कहते हैं कि जिस दिन से श्रीकृष्ण गोपी के सामने से एक बार हँसते हुए मुख फेरकर चले गए उसी दिन से नायिका विरह में व्याकुल हो गई है। ऐसा करते हुए श्रीकृष्ण जैसे उसका हृदय ही चुरा कर ले गए हैं, तभी से गोपी के शरीर से पाँच तत्वों में से एक–एक तत्व विदा होते चले जा रहे हैं। विरहावस्था में तेज–तेज सांसे छोड़ने से वायु तत्व, आंसू बहने के कारण जल तत्व, शरीर की गर्मी के द्वारा तेज (अग्नि) तत्व, विरह के दुख में दुखी होने के कारण शरीर की कमजोरी के कारण भूमि तत्व चला गया है। इतना सब होने पर भी गोपी ने श्रीकृष्ण से मिलने की आशा में आकाश तत्व को बनाए रखा है। वह तो श्रीकृष्ण से मिलने की आशा पर ही जीवित है। जिस दिन से श्रीकृष्ण ने गोपी की तरफ से मुँह फेर लिया है तभी से उसका दिल उन के साथ चला गया है और गोपी के मुख की हँसी गायब हो गयी है। वह कृष्ण को ढूँढ–ढूँढ कर थक चुकी है।

कला पक्ष / शिल्प सौंदर्य –

1. संपूर्ण सवैये में अतिशयोक्ति अलंकार दृष्टव्य है। गोपी के विरह का बढ़ा–चढ़ाकर (अतिशयोक्ति पूर्ण) वर्णन किया गया है।
2. शृंगार रस के वियोग पक्ष का वर्णन है।
3. ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।
4. सवैये में लयात्मकता तथा गेयता विद्यमान है।
5. माधर्य गुण है।
6. सवैया छंद है।
7. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है–सांसनि ही सौं समीर, तन की तनुजा आदि।
8. हरि जू हरि में यमक अलंकार है।
9. मुँह फेर लेना मुहावरे का प्रयोग किया गया है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. प्रस्तुत सवैये में किन पाँच भौतिक तत्त्वों का वर्णन है? वियोग में वे तत्त्व किस प्रकार विदा होते हैं?

उत्तर– 'हँसी की चोंट' सवैये में कवि ने इन पाँच तत्त्वों का वर्णन किया है:–

1) वायु 2) जल 3) भूमि 4) अग्नि 5) आकाश

वियोग में ये तत्त्व इस प्रकार विदा हो गए ।

1) वायु तत्त्व– वियोग में तेज साँसों के चलने से वायु तत्त्व विदा हो गया।
2) जल तत्त्व– निरन्तर आँसू बहने से जल तत्त्व बह गया।
3) अग्नि तत्त्व– शरीर का तेज मिटने से अग्नि तत्त्व चला गया।
4) शरीर की दुर्बलता से भूमि तत्त्व समाप्त हो गया।
5) केवल आकाश तत्त्व शेष है क्योंकि नायिका में अभी आशा शेष है।

2. साँसों से समीर जाने का क्या तात्पर्य हैं?

उत्तर– वियोग की दशा में नायिका गहरी आहें भरती है। अतः तेज साँसें लेने से उसके शरीर की प्राणवायु निकलती रहती है। पंचतत्वों से बने शरीर में वायु एक परम आवश्यक है। वियोगावस्था में इसी आवश्यकतत्व का क्षय होता रहता है।

अभ्यास–प्रश्न

1. श्रीकृष्ण ने गोपियों का क्या चुरा लिया है?
2. प्रस्तुत सवैये में गोपियों की किस मनोदशा का चित्रण है?
3. 'हेरि हियो जु लियो हरि जू हरि' का आशय स्पष्ट करें।

सपना

कवि – 'देव'– रीतिकालीन प्रमुख कवि

काव्य–सौंदर्य

झहरि–झहरी.....वा जमन में।

भावपक्ष – प्रस्तुत पंक्तियों में स्वप्न और उसके टूटने के माध्यम से कवि ने शृंगार रस के दोनों पक्षों अर्थात् संयोग व वियोग को बड़े ही रोचक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। कवि के अनुसार गोपियाँ हर अवस्था में (स्वप्न व जागृत) श्री कृष्ण का सान्निध्य चाहती हैं। उनके लिए श्री कृष्ण का वियोग असह्य है।

शिल्प सौंदर्य

1. कोमल कान्त पदावली युक्त ब्रज भाषा का प्रयोग।
2. शृगांर के दोनों पक्षों (संयोग व वियोग) को एक साथ प्रस्तुत किया है।
3. भाषा में चित्रात्मकता व तुकान्तता है। गेयता का गुण विद्यमान है।
4. कवित्त छंद का प्रयोग है।
5. ' झहरि–झहरि' तथा 'घहरि–घहरि' में पुनरुक्ति प्रकाश 'झहरि–झहरि झीनी' व 'निगोड़ी नींद' में अनुप्रास तथा 'सोए गए भाग मेरे' में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग है।
6. 'फूला न समाना' मुहावरे का प्रयोग है।
7. माधुर्य गुण है।
8. नींद का खुलना और भाग्य का सोना विरोधाभास से गोपी की पीड़ा अभिव्यक्त हुई है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर–

1. स्वप्न में नायिका की प्रसन्नता का क्या कारण था? उसकी प्रसन्नता क्यों खो गई ?

उत्तर– नायिका ने स्वप्न में देखा कि सुखद वर्षाकाल में कृष्ण उसके सम्मुख खड़े हैं और उससे झूला झूलने का आग्रह कर रहे हैं। नायिका इस प्रकार कृष्ण से मिलन के सुख के कारण प्रसन्नता से फूली नहीं समा रही थी। जैसे ही वह झूला झूलने के लिए उठी तभी उसकी नींद टूट गई । कृष्ण से मिलन न हो पाने के कारण उसकी प्रसन्नता खो गई ।

2. नींद को निगोड़ी क्यों कहा है?

उत्तर– नायिका नींद को कोसते हुए उसे निगोड़ी कह रही है क्योंकि उसके दुःख का कारण नींद है। नींद के खुलने से उसका कृष्ण से मिलन का सुख अधूरा रह गया।

अभ्यास–प्रश्न

1. प्रस्तुत कवित्त में किस ऋतु का वर्णन है?
2. सपना कवित्त का भाव–सौन्दर्य लिखें।
3. नींद टूट जाने से भाग सो जाने का क्या आशय है?
4. कवित्त से अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण छांटिए।

दरबार

कवि–देव

काव्य–सौंदर्य

भाव–पक्ष :– प्रस्तुत सवैये में कवि देव ने अपने समय के दरबारी तथा सामंती वातावरण पर करारी चोट करते हुए उसके प्रति अपने असंतोष को प्रकट किया है। कवि का कहना है कि भोगविलासिता से पूर्ण वातावरण में काव्य और कला का कोई मोल नहीं है। सभी लोग मात्र चाटुकारिता व अपने स्वार्थ सिद्धि में ही लगे हुए हैं।

शिल्प–सौंदर्य – 1. सवैया छंद का प्रयोग हैं।

2. लालित्यपूर्ण ब्रज भाषा प्रयुक्त हुई है।
3. 'रुचि राच्यों', 'निसि नाच्यो', 'निबरेनट' मसाहिब मूक, रंग–रीझ में अनुप्रास अलंकार है।
4. भोगविलास के कारण अकर्मण्यता दृष्टिगोचर होती हैं।
5. प्रसाद गुण है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. 'दरबार' सवैये में किस प्रकार के वातावरण का वर्णन है?

उत्तर– 'दरबार' सवैये में दरबारी वातावरण में कला विहीनता, भोग–विलासपूर्ण प्रवृत्ति का वर्णन है, चाटुकारिता (चापलूसी) पूर्ण व्यवहार का वर्णन है। रीतिकालीन काव्य में इस प्रकार की दरबारी संस्कृति का वर्णन अनेक कवियों ने किया है।

2. 'दरबार' में गुण ग्राहकता और कला की परख को किस प्रकार अनदेखा किया जाता है?

उत्तर– दरबार का वातावरण आंडबरपूर्ण (दिखावा) और चाटुकारों से भरा होता है। कला के पारखी वहाँ न के बराबर हैं इसलिए जो चापलूसी करता है राजा को वहीं पसंद आता है। वहाँ गुण को नहीं चाटुकारिता को श्रेष्ठ माना जाता है। सब पर भोग–विलास और राग–रंग का रंग चढ़ा है इसलिए राजा और दरबारी इत्यादि अंधे बने रहते हैं, ऐसे दरबारी वातावरण में गुण और कला की परख की बात करना व्यर्थ है।